

सँजय गॉधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ इण्डोक्राइनोलॉजी विभाग (Endocrinology)

थैलेसीमिया में हार्मोन संबंधित रख-रखाव

थैलेसीमिया में अपना हीमोग्लोबिन सामान्य रखने के लिए नियमित रूप से खून चढ़ाने की आवश्यकता होती है ।

ट्रॉन्सफ्यूजन किए गए खून के टूटने से मुक्त हुए लौहत्व एवं आंतों द्वारा भोजन के लौहत्व का अत्यधिक अवशोषण होने से आपके शरीर में लौहत्व जमा होने लग जाता है । यह लौहत्व अन्य अंगों (जैसे कि हृदय, जिगर) के साथ-साथ हार्मोन की ग्रंथियों में भी जमा हो जाता है । इस वजह से हार्मोनग्रंथियों की कार्य क्षमता कम होकर विभिन्न बीमारियों का कारण बन जाती है। इस स्थिति को रोकने के लिये लौहत्व के कीलेशन (chelation) की दवाइयों (जैसेकिकेलफर, डेफ्रीजेट आदि) अपने चिकित्सक की सलाहनुसार नियमित रूप से लें । साथ ही आपको नियमित रूप से (6 से 12 महीनों पर) शारीरिक एवं रक्त परीक्षण कराने की आवश्यकता होती है ताकि हार्मोन ग्रंथियों में होने वाली कमियों को पकड़ा जा सके एवं समय पर इलाज शुरू किया जा सके । यह इलाज विशेष परिस्थितियों में जीवन रक्षक भी साबित हो सकता है ।

निम्नलिखित परीक्षण आपको नियमित रूप से कराना चाहिए:

1. वजन, लंबाई की जांच सालाना
2. लड़कों एवं लड़कियों का हार्मोन संबंधित विकास के लिये **शारीरिक परीक्षण** — दसवर्ष के बाद : हर छः महीने पर (12- 13साल की उम्र तक हार्मोन सम्बन्धित विकास नहीं होने की स्थिति में हार्मोन रोग ओ०पी०डी० में सम्पर्क करें ।)
3. **कार्टिसोल हार्मोन** (cortisol or stress hormone) की जांच (सुबह 8 बजे) — (जरूरत पडने पर इंजेक्शन सिनेक्थेन लगाने के बाद जांच) दस वर्ष के बाद सालाना ।
4. रक्त में **कैल्शियम** की जांच : दस वर्ष के बाद छः से बारह महीने में (मॉसपेशियों में खिंचाव, चमडी में सुइयों चुभने का अहसास, दौरे आना या रक्त में टोटल कैल्शियम 7- 8mg/dl से कम आदि के लिए सावधान रहें एवं इन परिस्थितियों में अपनी अगली तिथि से पहले ही किसी भी सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार को हार्मोनरोग ओ०पी०डी० में तुरन्त सम्पर्क करें ।)
5. खाली पेट **शुगर जांच** (जरूरत पडने पर ग्लूकोज पिला कर शुगर जांच) : दस वर्ष के बाद छः से बारह महीने में । (बहुत प्यास लगना, बहुत पेशाब होना, वजन में कमी, खाली पेट शुगर 126 या किसी भी समय शुगर (random) 200 से अधिक होने पर अपनी अगली तिथि से पहले ही किसी भी सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार को हार्मोन रोग ओ०पी०डी० में तुरन्त सम्पर्क करें।)
6. **हड्डियों का स्वास्थ्य** : अनेक कारणों से थैलेसीमिया से ग्रसित लोगों को हड्डियों में कमजोरी आने की संभावना होती है। इस को रोकथाम एवं इलाज पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम (दूध एवं दूध से निर्मित पदार्थ, हरी पत्तेदार सब्जियाँ एवं विटामिन डी) लेकर कर सकते हैं ।
7. **थायरायड हार्मोन** (T4, TSH) की जांच : दस वर्ष के बाद हर एक से दो साल में ।

डा० लोकाेश शर्मा
इण्डोक्राइनोलॉजी विभाग